वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

2019–2020

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बिजेय भवन पैलेस कॉम्पलेक्स, पंडित दीनदयाल सर्किल के पास
बीकानेर-334 001 (राज.)

website : www.rajuvas.org

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
2019–2020

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बिजेय भवन पैलेस कॉम्पलेक्स, पंडित दीनदयाल सर्किल के पास
बीकानेर-334 001 (राज.)
website : www.rajuvas.org

सलाहकार मंडल

श्री अजीत सिंह
कुलसचिव
श्री अरविन्द बिश्नोई
वित्तनियंत्रक
प्रो. राकेश राव
संकाय अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., बीकानेर
प्रो. जी. सी. गहलोत
अधिष्ठाता, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर
प्रो. त्रिभुवन शर्मा
अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., नवानियाँ, वल्लभनगर
प्रो. एस.सी. गोस्वामी
अधिष्ठाता, छात्र कल्याण
प्रो. आर. के. सिंह
निदेशक, अनुसंधान
प्रो. ए. ए. गौरी
निदेशक, प्रसार शिक्षा
प्रो. जे. एस. मेहता
निदेशक, क्लिनिक्स
इंजि. एम.आर. चौधरी
निदेशक, कार्य
प्रो. सुनील महरचन्दानी
परीक्षा नियंत्रक
प्रो.आर. के. धूड़िया
समन्वयक, जनसम्पर्क प्रकोष्ठ
एवं विशेषाधिकारी, कुलपति
डॉ. अशोक डांगी
प्रभारी, आई.यू.एम.एस.

सम्पादक मण्डल

संरक्षक
प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा
कुलपति

मुख्य सम्पादक
प्रो. अंजू चाहर
निदेशक, पी.एम.ई.

प्रकाशक
प्राथमिकता, नियंत्रण एवं मूल्यांकन प्रकोष्ठ (पी.एम.ई. सेल)
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर, राजस्थान–334 001
ईमेलः dpmerajuvas@gmail.com

मुद्रक : जवाहर प्रेस, बीकानेर # 9784911114

प्रस्तावना

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की स्थापना 13 मई 2010 को हुई। तत्पश्चात इस विश्वविद्यालय ने अल्पसमय में न केवल प्रदेश में, अपितु देश में भी अपनी अग्रणी पहचान बनाई है। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क की इंडिया रैंकिंग–2019 में देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों में शीर्ष और राजस्थान के राजकीय विश्वविद्यालयों की कैटेगेरी में प्रथम स्थान बनाया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा कृषि विश्वविद्यालयों की घोषित रैंकिंग–2018 में राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों में वेटरनरी विश्वविद्यालय ने दूसरा स्थान हासिल किया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को यू.जी.सी 12–बी एक्ट के तहत मान्यता प्रदान की गई है। राज्य के सभी कृषि एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की केटेगरी में यू.जी.सी. से 12–बी मान्यता प्राप्त करने वाला वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर पहला विश्वविद्यालय बन गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा तीन संघटक महाविद्यालय बीकानेर, जयपुर एवं उदयपुर में संचालित किये जा रहे हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) की स्नातक डिग्री को 8 मार्च, 2019 को केन्द्रीय सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल किया गया है। राज्य सरकार ने इस वर्ष की बजट घोषणा में राज्य में एक नये वेटरनरी महाविद्यालय को जोधपुर में खोलने की स्वीकृति प्रदान की है। जोधपुर में खुलने वाला यह नया वेटरनरी कॉलेज, वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर का चौथा संघटक महाविद्यालय होगा। राज्य सरकार द्वारा इस नए महाविद्यालय के लिए 41 शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक पदों की स्वीकृति भी प्रदान की जा चुकी है। इसके अलावा तीन संबंध महाविद्यालय भी सीकर, चौमूं, एवं जयपुर में चलाए जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं के लिए रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम के रूप में दो वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा चलाया जा रहा है। इस हेतु 7 संघटक संस्थान एवं 74 संबद्ध संस्थान प्रदेश में संचालित हो रहे हैं।

राज्य सरकार द्वारा हाल ही में राजस्थान सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग द्वारा आयोजित ''राजस्थान नवाचार मीट'' समारोह–2019 में विश्वविद्यालय को संस्थानिक ई–गर्वनेन्स के लिए दूसरी बार श्रेष्ठ कार्यों के अपरांत **"ई–गर्वनेन्स राजस्थान"** अवॉर्ड से नवाजा है, वेटरनरी विश्वविद्यालय में एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन प्रणाली को विकसित कर वेटरनरी विश्वविद्यालय को पूरी तरह ई–गर्वनेन्स मोड पर लाये जाने के कारण इस पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह में 8 अगस्त, 2019 को पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के 669 छात्र–छात्राओं को उपाधियाँ, 30 को स्वर्ण पदक तथा एक को कुलाधिपति स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया। दीक्षांत समारोह में स्नातक योग्यता प्राप्त करने वाले 433 छात्र–छात्राओं को उपाधियाँ, स्नातकोत्तर 198 को तथा 38 को विद्या वाचस्पति उपाधियाँ प्रदान की गई।

डिजिटलाइजेशन के दौर में नेट पर सूचना की क्रांति की तर्ज पर वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के लिए ई–बुलेटिन शुरू किया गया है। इसके माध्यम से पशुचिकित्सा स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पशुचिकित्सा के क्षेत्र में नवाचार, अत्याधुनिक तकनीकी ज्ञान, रोजगार और अन्य उपयोगी कार्यक्रम एवं गतिविधियों की जानकारी निरन्तर उपलब्ध करवाई जा रही है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के सर्जरी विभाग में सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक प्रारम्भ किया गया है। इस ब्लॉक में सी.टी. स्केन, सोनोग्राफी, लैप्रोस्कोपी, लेजर सर्जरी, नेत्र रोग, ऑर्थोपेडिक तथा दंत रोग इकाईयां हैं, जिसका सीधा लाभ पशुपालकों व किसानों को मिलेगा।

अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय अभूतपूर्व कार्य कर रहा है। इस हेतु 8 पशुधन अनुसंधान केंद्र राज्य के बीकानेर, बीछवाल (बीकानेर), कोडमदेसर (बीकानेर), चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ़), नवानियां, (उदयपुर), बोजुंदा (चित्तौड़गढ़) और डग (झालावाड़) में स्थापित किए गए हैं। इनमें स्वदेशी गौवंश की 6 नस्लों राठी, साहीवाल, कांकरेज, थारपारकर, मालवी, गिर, एवं भेड़, बकरी और भैंसों की नस्लों के उन्नयन हेतु कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में गैर पारंपरिक क्षेत्रों में अनुसंधान हेतु राज्य सरकार के सहयोग से 10 उन्नत अनुसंधान केंद्र भी स्थापित किए गए हैं जिनमें पारंपरिक चिकित्सीय पद्धति से लेकर अंतरिक्ष आधारित अनुसंधान पर कार्य किये जा रहे हैं। इसके अलावा जैविक उत्पादों, पशु आपदा प्रबंधन, पशु जैव अपशिष्ट के निस्तारण, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी, चारा प्रबंधन एवं वन्यजीवों पर शोध हेतु अनुसंधान केंद्र स्थापित किए गए हैं जिनके माध्यम से प्रदेश के पशुपालकों को इन क्षेत्रों में भी नवीनतम शोध जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है।

इस वर्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 14 वां पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुन्झुनू में शुरू किया गया। राज्य के बाकलिया (नागौर), सूरतगढ, चूरू, कुम्हेर (भरतपुर), अजमेर, सिरोही, डूंगरपुर, टोंक, धौलपुर, कोटा, चितौड़गढ़, लूणकरणसर (बीकानेर), जोधपुर एवं झुंझुंनू जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा विभिन्न पशु कल्याण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिनसे वर्ष 2019–20 में कुल **49970** पशुपालक लाभांवित हुए।

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों, छात्रों एवं नागरिकों तक विश्वविद्यालय से संबंधित जानकारी पहुंचाने हेतु टोल फ्री हेल्पलाइन नं. 1800–180–6224 का संचालन भी किया जा रहा है जिसके द्वारा पशुपालक विभिन्न जानकारियां लेने के साथ ही अपनी शंकाओं का निवारण भी सीधे विषय विशेषज्ञों से संवाद द्वारा करते हैं। सत्र 2019–2020 में 134000 से अधिक किसानों, पशुपालकों, छात्रों आदि की समस्याओं का समाधान किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा आमजन तक नवीनतम जानकारी पहुचाने हेतु प्रदेश के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक माह के प्रथम एवं तृतीय गुरुवार को सांय 5.30 से 6.00 बजे तक रेडियो कार्याक्रम "धीणे री बात्यां" प्रसारित किया जा रहा है।

(विष्णु शर्मा)
कुलपति

अनुक्रमणिका

1.	**संगठनात्मक ढांचा**	**1–2**
2.	**स्वीकृत–कार्यरत तथा रिक्त पदों का विवरण**	**3–6**
2.1	शैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति	3
2.2	अशैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति	3–4
2.3	निजी सचिव एवं मंत्रालयिक पदों की श्रेणीवार स्थिति	4
2.4	अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति	5
2.5	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति	6
3.	**विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं उसकी विगत 3 वर्ष से तुलना**	**7–11**
3.1	**अकादमिक कार्यक्रम**	**7**
3.1.1	स्नातक पाठ्यक्रम (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.)	8
3.1.2	स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.)	9
3.1.3	विद्या–वाचस्पति / डाक्टरेट पाठ्यक्रम (पीएच.डी.)	10
3.1.4	पशुपालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (ए.एच.डी.पी.)	11
3.2	**अनुसंधान परियोजनाएं**	**12**
3.2.1	राष्ट्रीय कृषि विकास योजना	12
3.2.2	राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाएं	12
3.2.3	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद	12
3.2.4	विश्वविद्यालय रिवॉल्विंग फंड	12
3.3	**प्रसार शिक्षा कार्यक्रम**	**13**
4.	**आलौच्य वर्ष में विशेष पहल एवं उपलब्धि**	**14–16**
5.	**सार संक्षेप**	**17–18**

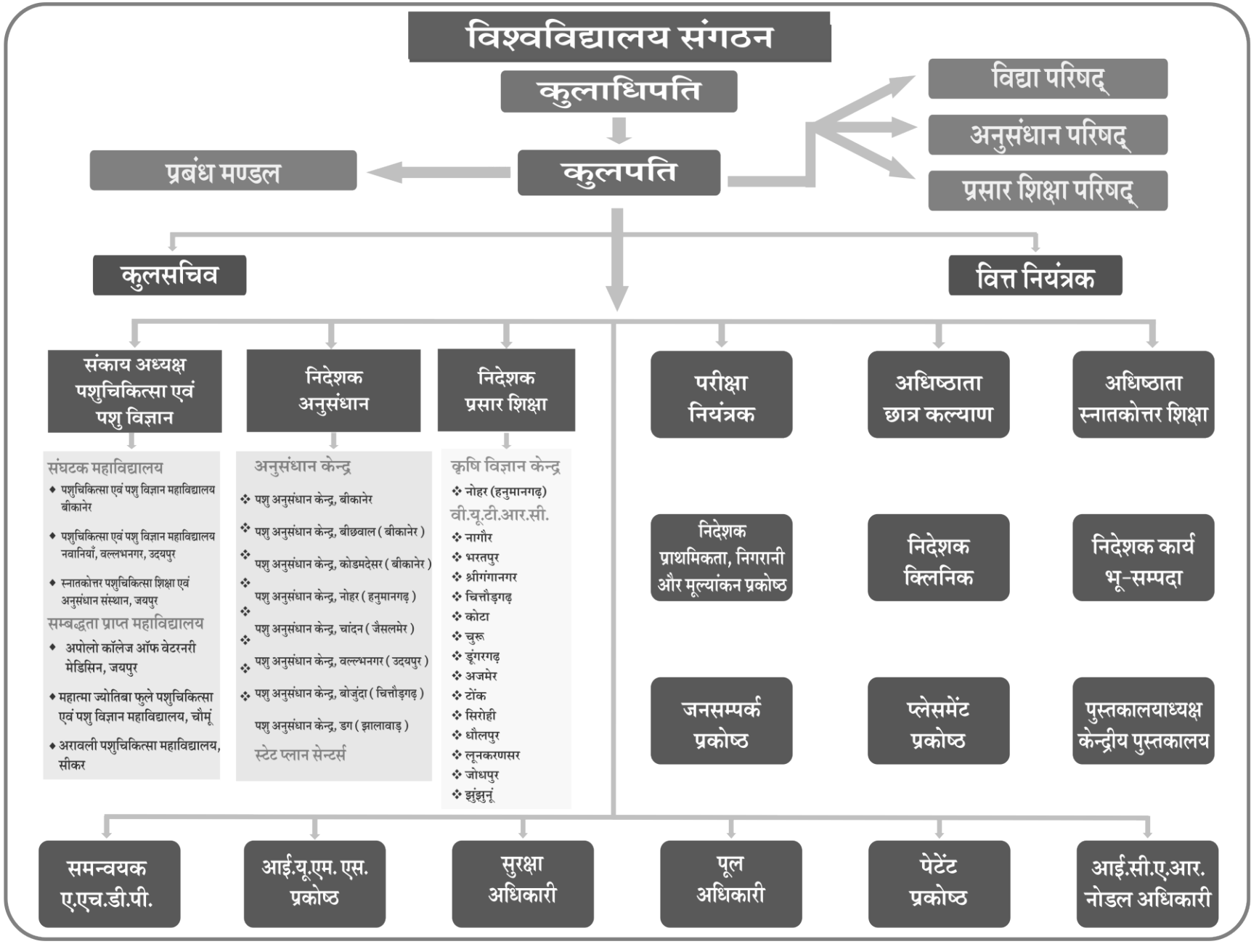
विश्वविद्यालय संगठन
कुलाधिपति
कुलपति
प्रबंध मण्डल
विद्या परिषद्
अनुसंधान परिषद्
प्रसार शिक्षा परिषद्
कुलसचिव
वित्त नियंत्रक
संकाय अध्यक्ष पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान
निदेशक अनुसंधान
निदेशक प्रसार शिक्षा
परीक्षा नियंत्रक
अधिष्ठाता छात्र कल्याण
अधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा
संघटक महाविद्यालय
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर
स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर
सम्बद्धता प्राप्त महाविद्यालय
अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर
महात्मा ज्योतिबा फुले पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमूं
अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर
अनुसंधान केन्द्र
पशु अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
पशु अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल (बीकानेर)
पशु अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर (बीकानेर)
पशु अनुसंधान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)
पशु अनुसंधान केन्द्र, चांदन (जैसलमेर)
पशु अनुसंधान केन्द्र, वल्लभनगर (उदयपुर)
पशु अनुसंधान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौड़गढ़)
पशु अनुसंधान केन्द्र, डग (झालावाड़)
स्टेट प्लान सेन्टर्स
कृषि विज्ञान केन्द्र
नोहर (हनुमानगढ़)
वी.यू.टी.आर.सी.
नागौर
भरतपुर
श्रीगंगानगर
चित्तौड़गढ़
कोटा
चुरू
डूंगरगढ़
अजमेर
टोंक
सिरोही
धौलपुर
लूनकरणसर
जोधपुर
झुंझुनूं
निदेशक प्राथमिकता, निगरानी और मूल्यांकन प्रकोष्ठ
निदेशक क्लिनिक
निदेशक कार्य भू-सम्पदा
जनसम्पर्क प्रकोष्ठ
प्लेसमेंट प्रकोष्ठ
पुस्तकालयाध्यक्ष केन्द्रीय पुस्तकालय
समन्वयक ए.एच.डी.पी.
आई.यू.एम. एस. प्रकोष्ठ
सुरक्षा अधिकारी
पूल अधिकारी
पेटेंट प्रकोष्ठ
आई.सी.ए.आर. नोडल अधिकारी

1. संगठनात्मक ढांचा

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की धारा 1 उपखण्ड (3) के अन्तर्गत नवस्थापित विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना दिनांक 13 मई, 2010 को की गई। राजस्थान राज्य के माननीय राज्यपाल अपने पद के आधार पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति है। कुलपति विश्वविद्यालय का प्रधान शैक्षणिक और कार्यपालक अधिकारी है।

अपनी स्थापना की अल्पावधि में ही विश्वविद्यालय ने प्रबंधन मण्डल, अकादमिक परिषद्, अनुसंधान परिषद् और प्रसार परिषद् आदि संवैधानिक निकायों का गठन किया। इन निकायों के गठन के साथ ही विश्वविद्यालय ने केन्द्रीय सलाहकार समिति, जनसम्पर्क प्रकोष्ठ और प्लेसमेंट प्रकोष्ठ का गठन किया। साथ ही विश्वविद्यालय ने अधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा, परीक्षा नियंत्रक, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, निदेशक क्लिनिक, निदेशक प्रसार शिक्षा, निदेशक कार्य, निदेशक पी.एम.ई. आदि महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियां की और कुछ अन्य समितियां बनाई गई। जिससे विश्वविद्यालय अधिनियम के अनुरूप समस्त कार्यों का क्रियान्वयन किया जा सके।

राज्य में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति हेतु इस विश्वविद्यालय को स्थापित किया गया है। पशुपालन का राज्य की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। विश्वविद्यालय और संबद्ध महाविद्यालयों में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान और संबंधित विषयों के बारे में उचित और व्यवस्थित निर्देशन, शिक्षण–प्रशिक्षण, अनुसंधान और प्रसार शिक्षण करवाया जाता है। राजस्थान सरकार अध्यापन, शिक्षण अनुसंधान और प्रसार के प्रयासों को सुगठित करने में विश्वविद्यालय की हमेशा सहायक रही है और विश्वविद्यालय को वृद्धि उन्मुख और प्रगतिशील बनाने में भी सहयोग करती है।

विश्वविद्यालय अपने तीन प्रमुख अंग–शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के निष्पादन के लिए समस्त सुविधाओं से सुसज्जित है। वर्तमान में विश्वविद्यालय के तीन संघटक महाविद्यालय है, ये बीकानेर, उदयपुर (नवानियाँ) और जयपुर में स्थित है।

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

राजस्थान प्रदेश में पशुचिकित्सा शिक्षा का प्रभावी और शानदार इतिहास रहा है। आजादी के तुरन्त बाद ही राज्य का पहला पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर में वर्ष 1954 में स्थापित किया गया। मुख्य कॉलेज भवन में प्रशासनिक कार्यालय और 18 स्वतंत्र विभाग हैं जिनमें अति सुसज्जित प्रयोगशालाएं तथा स्नातक, स्नातकोत्तर एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम शिक्षण और अनुसंधान के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं हैं। परिसर में पशुओं की विभिन्न इकाईयां, रोग नैदानिक सुविधाएं, पुस्तकालय, कैंटीन, व्यायामशाला, खेलकूद सुविधाएं और बैंक की शाखा भी है।

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर

उदयपुर के नवानियां, वल्लभनगर में राज्य के दूसरे वेटरनरी कॉलेज की स्थापना वर्ष 2007 में की गई। दक्षिणी राजस्थान में पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में कुशल विशेषज्ञता विकसित करना तथा जनजाति क्षेत्र के पशुपालकों की आवश्यकतानुसार अनुसंधान, प्रचार एवं प्रसार गतिविधियों को विकसित करना इस महाविद्यालय के प्रमुख उद्देश्य हैं। इस महाविद्यालय में स्नातक पाठ्यक्रम के साथ ही पशुचिकित्सा के विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर, पीएच.डी. में शोध एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम की सुविधा उपलब्ध है।

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान

जयपुर के राष्ट्रीय राजमार्ग–21, आगरा रोड़, जामडोली में स्थित इस संस्थान की स्थापना वर्ष 2012 में हुई। विश्वविद्यालय के इस परिसर को देश के चुनिन्दा 'सेन्टर ऑफ एक्सीलैन्स इन हायर एज्यूकेशन' के रूप में विकसित किया जा रहा है। वर्ष 2015–16 से इस संस्थान में स्नातक पाठ्यक्रम भी प्रारंभ कर दिया गया है। वर्तमान में यह संस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान के विभिन्न विषयों में स्नातकोत्तर एवं स्नातक डिग्री के साथ–साथ डिप्लोमा पाठ्यक्रम में भी उपाधि प्रदान कर रहा है।

विश्वविद्यालय से 7 संघटक एवं 74 सम्बद्ध संस्थानों में 2 वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम करवा रहे है, जिससे प्रतिवर्ष लगभग 4800 पैरावेट के प्रशिक्षण की क्षमता है। ये संस्थान बीकानेर, अलवर, भरतपुर, चुरू, दौसा, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, जयपुर, झुंझुनूं, जोधपुर, करौली, कोटा, बूंदी, श्रीगंगानगर, सीकर, टोंक, झालावाड़, जालौर, जैसलमेर, चितौड़गढ़, धौलपुर, बाड़मेर, बारां और उदयपुर आदि जिलों में स्थित है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के अलावा नए पशुपालन डिप्लोमा संस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ (उदयपुर), स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र, जयपुर, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन, (जैसलमेर), पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़), पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चतौडगढ़), पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग (झालावाड़), में स्थित है।

विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्र है, जिनमें पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, बीछवाल (बीकानेर), कोडमदेसर (बीकानेर), चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ़), नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर), बोजुन्दा (चित्तौड़गढ) एवं डग (झालावाड़) में स्थापित है। इन अनुसंधान केन्द्रो के माध्यम से राज्य की 6 देशी गौवंश नस्लों राठी, थारपारकर, गिर, साहीवाल, मालवी और कांकरेज के विकास और संवर्द्धन का कार्य कर रहा है। देशी गौवंश पोषणयुक्त ए–2 दूध, अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता और कम लागत में हमारे लिए अधिक उपयोगी है। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से हैरिटेज जीन बैंक की अवधारणा के तहत पशुपालकों व गौशालाओं को स्वदेशी गौवंश प्रजनन के लिए उन्नत किस्म के लिए बछड़े और सांड उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। राजुवास द्वारा 2500 से भी अधिक श्रेष्ठतम नस्ल के बछड़े व सांड उपलब्ध करवाए गए हैं। इससे गौशालाओं और पशुपालकों के यहां स्वदेशी गौवंश की संख्या में बढ़ोतरी के साथ हैरिटेज जीन बैंक की अवधारणा को मूर्त रूप मिल रहा है। इन अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गौवंश के अलावा भैंस, भेड़ बकरी के संवर्द्धन व उन्नयन तथा पशुधन चारा उत्पादन के कार्य किए जा रहे हैं धौलपुर में स्थित अंगई बकरी फार्म में सिरोही बकरी पर अनुसंधान किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालको तक नवीनतम शोध की जानकारी पहुचाने हेतु उनकी समस्याओं के समाधान हेतु 14 वी. यू.टी.आर.सी. केन्द्र बाकलिया, सूरतगढ़, कुम्हेर, बोजुन्दा, चूरू, टोंक, डूंगरपुर, सिरोही, कोटा, धौलपुर, लूणकरनसर, अजमेर, जोधपुर और झुंझुंनू में एवं एक कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में स्थापित किये गए है। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह का केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा पशुकल्याण सेवाओं के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के लिए पशुपालक प्रशिक्षण शिविर, पशुचिकित्सा शिविर, पशुपालक गोष्ठी, वैज्ञानिक पशुपालक संवाद, फील्ड दिवस, जागरूकता शिविर और उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन का आयोजन कर पशुपालकों को लाभांवित किया जाता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित विश्वविद्यालय का पहला कृषि विज्ञान केन्द्र हनुमानगढ़ जिले के नोहर कस्बे में स्थापित है। केन्द्र द्वारा ऑन फार्म ट्रायल, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, संस्थानिक और गैर संस्थानिक प्रशिक्षणों सहित प्रसार शिक्षा के तहत क्षेत्रीय दिवस, किसान मेला, किसान गोष्ठी, प्रदर्शनी, परिणामों का प्रदर्शन, वैज्ञानिकों, कृषकों का भ्रमण, पशुचिकित्सा शिविर, फार्म साईंस क्लब, स्वयं सहायता समूहों के संयोजकों का सम्मेलन जैसे कार्य किये जाते है। यह कृषि विज्ञान केन्द्र नव तकनीक और प्रौद्योगिकी को पशुपालकों तक हस्तांतरण के महती कार्य में जुटा हुआ है।

2. स्वीकृत–कार्यरत तथा रिक्त पदों का विवरण

2.1 शैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

पद का नाम	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
आचार्य	54	8	46
सह–आचार्य	103 (*3 आई.सी.ए.आर)	30	73
सहायक आचार्य	209 (*1 आई.सी.ए.आर)	103	106
योग	**366**	**141**	**225**

* आई.सी.ए.आर (4 पद)

2.2 अशैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
(i) अधिकारी			
कुलपति	1	1	...
अधिष्ठाता	4	....	4
अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर शिक्षा	1	....	1
निदेशक	2	....	2
कुलसचिव	1	....	1
वित्त नियंत्रक	1	1	...
परीक्षा नियंत्रक	1	....	1
अतिरिक्त निदेशक	3	....	3
निदेशक कार्य	1	1	...
पुस्तकालयाध्यक्ष	1	....	1
योग	**16**	**3**	**13**
(ii) कनिष्ठ अधिकारी			
उपकुलसचिव	1	...	1
सहायक कुलसचिव	6	3	3
उप वित्तनियंत्रक	1	...	1
सहायक निदेशक	2	...	2
सहायक अभियंता	5	...	5
उप–पुस्तकालयाध्यक्ष	1	1	...
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	3	...	3
लेखाधिकारी	2	1	1
विधि अधिकारी	1	1	...
कार्यक्रम समन्वयक	4 (**1 के.वी.के.)	...	4
विषय विशेषज्ञ	6 (**6 के.वी.के.)	...	6
योग	**32**	**6**	**26**

	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
(iii) मंत्रालयिक कर्मचारी (विश्वविद्यालय की सभी इकाईयों)	160 (*3 आई.सी.ए.आर) (**4 के.वी.के.) (***4 जॉब बेसिस)	52	108
(iv) अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी (विभाग, प्रयोगशाला, फार्म एवं विभिन्न अनुसंधान केन्द्र)	214 (*6 आई.सी.ए.आर) (**3 के.वी.के.)	51	163
(v) चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	423 (***84 जॉब बेसिस) (**2 के.वी.के.)	205	218
योग (i)+(ii)+(iii)+(iv)+(v)	**845**	**317**	**528**
महायोग (शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक)	**1211**	**458**	**753**

* आई.सी.ए.आर (9 पद), ** के.वी.के.(16 पद), *** जॉब बेसिस (88 पद)

2.3 निजी सचिव एवं मंत्रालयिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
1	निजी सचिव	1	1	...
2	सीनियर निजी सहायक	5	2	3
3	निजी सहायक	7	1	6
4	शीघ्रलिपिक	6 (**1 के.वी.के.)	1	5
5	अनुभाग अधिकारी	6	1	5
6	सहायक लेखाधिकारी	3	3	....
7	लेखाकार	7	7	.....
8.	सहायक लेखाकार	2	....	2
9.	सहायक अनुभाग अधिकारी	7 (**1 के.वी.के.)	6	1
10.	वरिष्ठ लिपिक	20	17	3
11.	कनिष्ठ लिपिक	85 (*3 आई.सी.ए.आर) (***4 जॉब बेसिस)	12	73
12.	स्टोर मुंशी	2	...	2
13.	कम्प्यूटर ऑपरेटर	4	1	3
14.	विधि सहायक	1	...	1
15.	प्रोग्रामर	2	...	2
16.	प्रोग्राम सहायक	2 (**2 के.वी.के.)	...	2
	योग	**160**	**52**	**108**

* आई.सी.ए.आर (3 पद), ** के.वी.के.(4 पद), *** जॉब बेसिस(4 पद)

2.4 अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
	अन्य शिक्षक			
1	वी.ए.एस.	7	...	7
2	पशु चिकित्सा अधिकारी	3 (*1 आई.सी.ए.आर)	...	3
3	अनुदेशक	13	...	13
	तकनीकी कर्मचारी			
4	तकनीकी सहायक	57 (*2 आई.सी.ए.आर)	22	35
5	फार्म मैनेजर	1 (**1 के.वी.के.)	...	1
6	फार्म सहायक	2	...	2
7	प्रोफेशनल असिस्टैंट (लाईब्रेरियन)	1	1	...
8	सहायक कृषि अधिकारी	4	2	2
9	डेयरी प्लांट ऑपरेटर	1	...	1
10	सीनियर मैकेनिक	1	...	1
11	प्रयोगशाला सहायक	37	2	35
12	जे.टी.ए.	2	...	2
13	आर्टिस्ट	1	...	1
14	स्टॉकमैन/एल.एस.ए.	15 (*3 आई.सी.ए.आर)	2	13
15	राईडिंग इंस्ट्रैक्टर	1	1	...
16	कृषि पर्यवेक्षक	3	...	3
17	लाईब्रेरी सहायक	3	1	2
18	पोल्ट्री सहायक	1	...	1
19	डेयरी सहायक	5	...	5
20	जूनि. कम्पाउंडर	2	1	1
21	बॉयलर ऑपरेटर	1	...	1
22	मैर्टन	1	1	...
23	ड्राईवर	33 (*2 के.वी.के.)	11	22
24	पम्प ऑपरेटर	4	3	1
25	मिस्त्री	4	2	2
26	कारपेन्टर	2	0	2
27	वायरमेन	1	1	...
28	पलम्बर	1	0	1
29	ब्लैक स्मिथ	1	...	1
30	जूनियर मैकेनिक/फार्म मैकेनिक	5	1	4
31	क्यूरेटर	1	...	1
	योग	**214**	**51**	**163**

* आई.सी.ए.आर (6 पद), ** के.वी.के.(3 पद)

2.5 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
1	हैड माली	1	...	1
2	बुक लिफ्टर	3	2	1
3	प्रयोगशाला अटैंडेन्ट	61	21	40
4	फार्म वर्कर	49 (***31 जॉब बेसिस)	12	37
5	हाली/प्लगमैन	3	3	...
6	बुलॉक अटैंडेंट	6	3	3
7	कैटल अटैंडेंट	85 (***33 जॉब बेसिस)	33	52
8	सहायक	28	10	18
9	लाईब्रेरी बॉय	4	2	2
10	तांगा ड्राईवर	1	...	1
11	गार्डनर	8	7	1
12	शीप अटैंडेंट	3	3	...
13	फराश	1	1	...
14	वॉचमैन	7	2	5
15	बस क्लीनर	4	3	1
16	स्वीपर	11	5	6
17	पोल्ट्री अटैंडेंट	9 (***2 जॉब बेसिस)	6	3
18	बुचर	1	1	...
19	मैड	1	1	...
20	हॉस्टल अटैंडेंट	3	3	...
21	शैफर्ड	2	1	1
22	चपरासी	97 (**2 के.वी.के.) (1***जॉब बेसिस)	72	25
23	बेलदार	5	4	1
24	साईकिल सवार	1	1	...
25	एनिमल अटैंडेंट	26 (***16 जॉब बेसिस)	9	17
26	पोस्ट मार्टम अटैंडेंट	1 (***1 जॉब बेसिस)	...	1
27	लोहार	1	...	1
28	मैकेनिक	1	...	1
	योग	**423**	**205**	**218**

** के.वी.के.(2 पद), *** जॉब बेसिस (84 पद)

3. विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं उसकी विगत 3 वर्ष से तुलना

3.1 अकादमिक कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की भूमिका और शासनादेश के अनुसार यह परिकल्पित किया गया है कि विश्वविद्यालय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार कार्यक्रमों को और आगे बढ़ाएगा। विश्वविद्यालय ने छात्रों को विभिन्न स्तरों पर जैसे डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर और पी.एच.डी पर प्रशिक्षण देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर विधार्थियों को अनेकों शैक्षणिक और प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा शिक्षित एवं प्रशिक्षित कर रहा है ताकि उनमें ज्ञान एवं नेतृत्व विकसित हो सके और वे कुशल पेशेवर पशुचिकित्सक बन सकें तथा विश्वव्यापी आर्थिक चुनौतियों का मुकाबला कर सकें। विश्वविद्यालय में शिक्षण का कार्य संकाय अध्यक्ष, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान, अधिष्ठाता पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय तथा विभागाध्यक्षों के निर्देशन में करवाया जाता है। विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य मुख्यतः व्याख्यान एवं इलेक्ट्रानिक शिक्षण साधनों का उपयोग, प्रयोगशालाओं में प्रयोगात्मक अध्ययन, चिकित्सालयों और पशुधन फार्मो पर कराया जाता है। स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों का आंतरिक एवं बाह्य परिक्षाओं द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों द्वारा विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिये स्नातक, स्नातकोत्तर तथा विद्या वाचस्पति स्तर पर विद्यार्थियों को अनुसंधान परियोजना निर्माण, विश्वविद्यालय व राष्ट्रीय स्तर पर सह पाठ्यक्रम कौशल प्रदान करने, शैक्षणिक भ्रमण और इंर्टनशिप प्रशिक्षण के लिये सुविधाऐं प्रदान की जाती हैं।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संघटक महाविद्यालय व डिप्लोमा संस्थान निम्न प्रकार से हैं।

1. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
2. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर
3. स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर
4. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन, जैसलमेर
5. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर, हनुमानगढ़
6. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा, चितौड़गढ़
7. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग, झालावाड़

विश्वविद्यालय द्वारा निजी महाविद्यालयों / संस्थानों को संबद्धता

विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक पाठ्यक्रम हेतु तीन निजी पशुचिकित्सा महाविद्यालय (अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर, एम.जे.एफ. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमूं जयपुर तथा अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर) को संबद्धता दी गई है। इसी प्रकार दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम हेतु प्रदेश में निजी संस्थानों को विश्वविद्यालय द्वारा संबद्धता प्रदान की जाती है।

वर्तमान में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के संकाय में निम्नलिखित पाठ्यक्रम कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

उपाधि	पाठ्यक्रम	अवधि
स्नातक पूर्व	**पशुपालन में डिप्लोमा** (भारतीय पशुचिकित्सा परिषद अधिनियम, 1984 के अनुसार न्यूनतम पशुचिकित्सा सेवा प्रदाताओ के लिए बुनियादी योग्यता)	2 वर्ष
स्नातक	**बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.**	5 वर्ष 6 माह
स्नातकोत्तर	**एम.वी.एससी.** पशु शरीर रचना एवं औतिकी, पशु शरीर क्रिया विज्ञान, पशु जैव रसायन विज्ञान, पशु पोषण, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु व्याधिकी, पशु सुक्ष्म जैविकी, पशु परजीवी विज्ञान, पशु जनस्वास्थ्य, पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र, पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा, पशु जैव प्रौद्योगिकी, पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान, पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विज्ञान	2 वर्ष
	एम.एस.सी. पशु जैव प्रौद्योगिकी	2 वर्ष
विद्या वाचस्पति	**पीएच.डी.** पशु शरीर रचना एवं औतिकी, पशु शरीर क्रिया विज्ञान, पशु पोषण, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु व्याधिकी, पशु सुक्ष्म जैविकी, पशु परजीवी विज्ञान, पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान, पशु जैव प्रौद्योगिकी, पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा, पशु जनस्वास्थय विज्ञान, पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान, पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	3 वर्ष

3.1.1 स्नातक पाठ्यक्रम (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.)

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नातक (बी.वी.एस.सी एण्ड ए.एच.) पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के सभी संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों (सी.वी.ए.एस., बीकानेर, सी.वी.ए.एस., नवानियां, वल्लभनगर, उदयपुर तथा पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर) एवं तीन संबद्ध निजी पशुचिकित्सा महाविद्यालयों (अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर, एम.जे.एफ. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमुं, जयपुर तथा अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर) में चलाये जा रहे हैं। भारतीय पशुचिकित्सा परिषद के नये मानदण्डो के अनुसार यह पाठ्यक्रम साढ़े पाँच वर्ष की अवधि (साढ़े चार वर्ष का पाठ्यक्रम और 1 वर्ष का इंर्टनशिप प्रशिक्षण) का है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय, बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी. जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर में यू.जी. पाठ्यक्रम में राज्य सरकार की स्वीकृति के बाद 80–80 सीटें की गई है। विगत वर्षों तक स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश राज्य की 85 प्रतिशत सीटों के लिये राजस्थान प्री पशुचिकित्सा परीक्षा (आर.पी.वी.टी) के माध्यम से किया जाता है। 15 प्रतिशत सीटों पर भारतीय पशुचिकित्सा परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रवेश दिया जाता है।

बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या (सत्र 2019–20)

क्र.सं.	संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों का नाम	बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.					कुल छात्र
		I	II	III	IV	V	
1.	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	**80**	**71**	**65**	**65**	**92**	373
2.	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	**80**	**67**	**62**	**61**	**82**	352
3.	पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	**80**	**73**	**69**	**49**	**55**	326
	कुल छात्र	**240**	**211**	**196**	**175**	**229**	**1051**

3.1.2 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.)

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.) विश्वविद्यालय के निम्नलिखित तीन संघटक महाविद्यालयों में चलाये जा रहे है।

1. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
2. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर
3. स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर

विश्वविद्यालय ने वर्तमान में उपलब्ध शिक्षकों की संख्या के आधार पर 112 पी.जी. की सीटें है। स्टॉफ और सुविधाओं की उपलब्धता के आधार पर एम.वी.एससी. के लिए प्रत्येक विषय में कम से कम तीन और अधिकतम छः सीटें हैं। एम.वी.एससी. में प्रवेश प्री.पी.जी परीक्षा द्वारा राज्य की सीटों पर किया जाता है इसके अलावा प्रत्येक विषय में 1 सीट पर प्रवेश आईसीएआर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्री.पी.जी. परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नात्तकोतर पाठ्यक्रम पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय नवानियाँ, उदयपुर तथा स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान संस्थान, जयपुर में निम्नलिखित विषयों में चलाये जा रहे हैं।

पशुचिकित्सा विज्ञान में स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम के लिए सीटों की संख्या

क्र. सं.	विषय	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर			पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ उदयपुर		पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	
		राज्य	आई.सी.ए.आर.	संदाय	राज्य	संदाय	राज्य	संदाय
1.	पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी	1	1	3	1	1	1	1
2.	पशु पोषण	1	1	3	1	1	1	2
3.	पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन	2	1	3	1	1	1	3
4.	पशु शरीर रचना एवं औतिकी	1	1	1	–	2	–	–
5.	पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा	1	–	1	1	1	1	1
6.	पशु जैव रसायन	1	1	1	–	–	1	1
7.	पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र	1	1	3	1	2	1	3
8.	पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा	1	1	–	–	–	–	–
9.	पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान	1	1	3	1	1	1	1
10.	पशु सूक्ष्म–जैविकी	–	1	–	1	2	–	2
11.	पशु परजीवी विज्ञान	1	1	2	–	2	1	1
12.	पशु व्याधिकी	2	1	3	1	3	1	1
13.	पशु शरीर क्रिया विज्ञान	2	1	–	–	1	–	2
14.	पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य विज्ञान	–	1	–	–	2	–	1
15.	पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण	2	1	5	1	1	1	1
16.	पशु जैव प्रौद्योगिकी	–	–	1	–	–	–	–
17.	पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान	–	–	2	–	–	–	–
18.	पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	–	–	2	–	1	–	2
	कुल	**17**	**14**	**33**	**9**	**21**	**10**	**22**

नोट : प्रवेश के समय विश्वविद्यालय अपने संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर सीटों को किसी भी विषय में बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

एम.वी.एससी. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या (सत्र 2019–20)

संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों का नाम	एम.वी.एससी.	
	I	II
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	63	56
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	20	25
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	25	14
कुल छात्र	**108**	**95**

3.1.3 विद्या–वाचस्पति / डाक्टरेट पाठ्यक्रम (पीएच.डी.)

डाक्टरेट पाठ्यक्रम में प्रवेश विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विनियमन के अनुसार विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्री. पी. जी. परीक्षा के आधार पर निम्नलिखित विषयों में दिये जाते हैं। पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर) में डाक्टरेट पाठ्यक्रम सत्र् 2015–16 से शुरू किया गया हैं। विश्वविद्यालय ने वर्तमान में उपलब्ध शिक्षकों की उपलब्धता के आधार पर चालू सत्र में 24 पीएच.डी. की सीटें हैं।

क्र. सं.	विषय	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर			पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ उदयपुर		पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	
		राज्य	आई.सी.ए.आर.	संदाय	राज्य	संदाय	राज्य	संदाय
1.	पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी	1	1	2	–	1	–	–
2.	पशु पोषण	–	1	1	–	1	1	1
3.	पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन	1	1	1	–	–	1	1
4.	पशु शरीर रचना एवं औतिकी	–	1	1	–	1	–	–
5.	पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र	1	1	–	–	1	–	1
6.	पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान	1	1	1	–	–	–	–
7.	पशु सुक्ष्म–जैविकी	–	1	1	–	–	–	–
8.	पशु व्याधिकी	1	1	1	–	–	–	–
9.	पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण	–	1	1	–	–	–	–
10.	पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	–	–	1	–	–	–	–
	कुल	**5**	**9**	**10**	–	**4**	**2**	**3**

पीएच.डी. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या (सत्र 2019–20)

संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालय का नाम	पीएच.डी.			कुल छात्र
	I	II	III	
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	21	20	10	51
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	2	4	7	13
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	6	8	4	18
कुल छात्र	**29**	**32**	**21**	**82**

3.1.4 पशुपालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (ए.एच.डी.पी.)

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में स्वरोजगारोन्मुख दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2007–08 से चलाया जा रहा है। विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम के लिए बुनियादी सुविधाऐं हॉस्टल, नैदानिक सुविधाऐं, फार्म सहित मौजूदा सुविधाओं का उपयोग कर रहा है। वर्ष 2019–20 में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के 7 संघटक एवं अन्य संबद्ध संस्थानों में चलाया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों में छात्र संख्या (सत्र 2019–20)

क्र.सं.	संघटक एवं संबद्ध पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों का नाम	डिप्लोमा पाठ्यक्रम		कुल छात्र संख्या
		I	II	
1.	पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	42	44	86
2.	पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर	46	50	96
3.	स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर	36	46	82
4.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, नोहर, हनुमानगढ़	44	48	92
5.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, चांदन, जैसलमेर	34	43	77
6.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, चित्तौड़गढ़	50	47	97
7.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, डग, झालावाड़	41	44	85

स्वीकृत सीटों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

पाठ्यक्रम	अवधि	स्वीकृत छात्र संख्या		
		2017–18	2018–19	2019–20
स्नातक	5 वर्ष 6 माह	240	240	240
स्नाकोत्तर	2 वर्ष	104	110	112
विद्या वाचस्पति	3 वर्ष	42	48	24
*स्नातक पूर्व (डिप्लोमा पाठयक्रम)	2 वर्ष	350	350	350

* संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थाए

स्वीकृत पदों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

पद का नाम	2017–18			2018–19			2019–20		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
आचार्य	49	18	31	49	08	41	54	8	46
सह–आचार्य	100	30	70	99	30	69	103	30	73
सहायक आचार्य	190	108	82	190	103	87	209	103	106
अधिकारी	15	4	11	15	3	12	16	3	13
कनिष्ठ अधिकारी	31	6	25	31	6	25	32	6	26
मंत्रालयिक कर्मचारी	156	45	111	156	53	103	160	52	108
तकनीकी कर्मचारी	206	54	152	212	50	162	214	51	163
चर्तुर्थ श्रेणी कर्मचारी/चपरासी	405	203	202	413	204	209	423	205	218
योग	1152	468	684	1165	457	708	1211	458	753

3.2 अनुसंधान परियोजनाएँ

3.2.1 राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाओं में पूर्व में स्वीकृत 19 परियोजनाओं का उद्देश्य पूर्ण हो गया है व चार परियोजनाऐं इस वर्ष भी जारी है। जयपुर में जूनोटिक रोगों का निदान, निगरानी एवं प्रतिक्रिया केन्द्र, जैसलमेर जिले में थारपारकर गौवंश के आनुवंशनिक उन्नयन् केन्द्र का क्रियान्वयन, डग (झालावाड़) में मालवी गौवंश पशु प्रजनन फार्म और पशु पालन में डिप्लोमा हेतु संस्थान की स्थापना, धौलपुर में लाभकारी बकरी फार्मिंग सिस्टम के प्रदर्शन के लिए बकरी प्रजनन फार्म की स्थापना की गई है।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ''रफ्तार'' के अन्तर्गत वेटरनरी विश्वविद्यालय को वर्ष 2019–20 के लिए 7.50 करोड़ रूपये अनुदान की स्वीकृति प्रदान की है। इससे विश्वविद्यालय में 6 परियोजनाएं प्रारम्भ की जाएगी। नई परियोजनाओं के तहत दक्षिणी राजस्थान में गाय–भैंसों की प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए राजकीय पैरावेट को प्रशिक्षण दिया जाएगा। राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन की दुग्ध समितियों के सचिवों और प्रयोगशाला कार्मिकों को स्वच्छ और गुणवत्ता वाले दुग्ध उत्पादन के लिए दक्षता कार्यक्रम भी चलाए जायेंगे। राज्य में देशी नस्ल की मुर्गियों के जर्मप्लाज्म को गुणित करने के लिए पोल्ट्री इकाई का गठन किया जाएगा। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ''रफ्तार'' के तहत ही देश गौवंश राठी के फार्म को जैविक डेयरी फार्म के रूप में विकसित करने के लिए 1 करोड़ 5 लाख रूपये की राशि व्यय की जाएगी। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रो पर पशु आहार प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना की परियोजना को भी स्वीकृति मिली है। विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा उपचार एवं फार्म की बेहतरी सेवाओं के परियोजनाएं शामिल है।

3.2.2 राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाएं

राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाओ के तहत राठी गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना तथा प्रजनन के माध्यम से राठी गौवंश का संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार (नोहर), कांकरेज गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना (कोडमदेसर), गिर गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना (नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर), वैक्सीनोलॉजी एवं बायोलॉजिकल प्रोडक्ट रिसर्च सेंटर (बीकानेर), पशु रोग जाँच एवं निगरानी के लिए शीर्ष केन्द्र (बीकानेर), पशु विज्ञान में अंतरिक्ष आधारित प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए उत्कृष्ट केन्द्र (बीकानेर), वन्यजीव प्रबंधन और स्वास्थ्य अध्ययन केन्द्र (बीकानेर), प्रजनन के माध्यम से साहीवाल गौवंश का संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार (कोडमदेसर), पारम्परिक और वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति केन्द्र (बीकानेर), पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन और प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), जैविक पशु उत्पाद प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र (बीकानेर), पशु आपदा प्रबंधन प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), प्रजनन के माध्यम से राठी गौवंश का मूल्यांकन और सुधार (बीकानेर), पशु विज्ञान इंजिनियरिंग और प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर) परियोजनाएं शामिल है।

3.2.3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

भरतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं के अंतर्गत सूरती भैंस उन्नयन हेतु नेटवर्क परियोजना (वल्लभनगर), जानवरों की शल्य चिकित्सा स्थितियों के निदान, इमेजिंग और प्रबंधन पर अखिल भारतीय नेटवर्क कार्यक्रमं (बीकानेर), किसानों की सिरोही बकरियों में आनुवाशिंक सुधार हेतु ए.आई.सी.आर.पी. (वल्लभनगर), मारवाड़ी बकरी सुधार हेतु एआईसीआरपी (बीकानेर), सोनाडी भेड़ हेतु वृहद भेड़ बीज प्रजनन (वल्लभनगर), श्वान में पालन अनुभव व ज्ञानवर्द्धक इकाई (वल्लभनगर) कार्यशील है।

3.2.4 विश्वविद्यालय रिवॉल्विंग फंड (परिकार्मी निधि)

रिवॉल्विंग फंड (परिकार्मी निधि) के अंतर्गत विश्वविद्यालय के रिवॉल्विंग फंड के माध्यम से चारा एवं बीज उत्पादन वृद्धि (एल.आर.एस, चांदन), मारवाड़ी बकरी का विकास एवं संरक्षण (चांदन), पशु चिकित्सा एनाटॉमी की शिक्षण गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए जानवरों की विभिन्न प्रजातियों की हड्डियों का संरक्षण और अभिव्यक्ति (वल्लभनगर), कृषि गतिविधियों के माध्यम से आय वृद्धि (बोजून्दा), बछड़ों के लिए ओ.आर.एस. आपूर्ति (वल्लभनगर), उदयपुर परिसर में बायोगैस के माध्यम से वैकल्पिक विद्युत ऊर्जा उत्पादन (वल्लभनगर), सिराही बकरी प्रजनन परियोजना (बीछवाल), हरा चारा और बीज उत्पादन (बीछवाल), सेवण घास उत्पादन (कोडमदेसर), दुग्ध और दुग्ध उत्पादों का प्रसंस्करण और विपणन (नवानियां, उदयपुर), देशी गौवंश दुग्ध उत्पादों का उत्पादन (बीकानेर) इकाइयां शामिल है।

3.3 प्रसार शिक्षा कार्यक्रम

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालको तक नवीनतम शोध की जानकारी पहुचाने हेतु उनकी समस्याओं के समाधान हेतु 14 वी. यू.टी.आर.सी. केन्द्र बाकलिया, सूरतगढ़, कुम्हेर, बोजुन्दा, चूरू, टोंक, डूंगरपुर, सिरोही, कोटा, धौलपुर, लूणकरनसर, अजमेर, जोधपुर और झुंझुंनू में एवं एक कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में स्थापित किये गए है। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह का केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा पशुकल्याण सेवाओं के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के लिए पशुपालक प्रशिक्षण शिविर (1144), पशुचिकित्सा शिविर (14), पशुपालक गोष्ठी (125), वैज्ञानिक पशुपालक संवाद (53), फील्ड दिवस (155), जागरूकता शिविर (97) और उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन (81) का आयोजन कर गत एक वर्ष में कुल 49970 पशुपालकों को लाभांवित किया जा चुका है।

पिछले तीन वर्षो का वीयूटीआरसी का तुलनात्मक विवरण

	2017–18	2018–19	2019–20
वी.यू.टी.आर.सी. की संख्या	12	13	14
प्रशिक्षण कार्यक्रम	1023	1097	1144
प्रशिक्षण लाभार्थी	33009	34153	49970

'धीणे री बात्यां'

विश्वविद्यालय द्वारा 10 जनवरी 2013 से आकाशवाणी के बीकानेर केन्द्र से 'धीणे री बात्यां' का प्रसारण शुरू किया जा रहा है। 14 मई, 2014 से इसका प्रसारण राज्य के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से किया जा रहा है। वर्तमान में इस कार्यक्रम का प्रसारण हर माह के प्रथम एवं तृतीय गुरूवार को सांय 5:30 बजे से 6 बजे तक किया जाता है। 264 वां प्रसारण दिसम्बर, 2019 तक हुआ है।

टोल फ्री हैल्पलाइन

माननीय राज्यपाल श्रीकल्याण सिंह ने 16 नवम्बर 2016 को वेटरनरी विश्वविद्यालय की महत्वाकांक्षी टोल–फ्री हैल्पलाईन सेवा का शुभारम्भ किया। चौबीस घण्टे इस टोल–फ्री नम्बर पर कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी किसी भी समय पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों, शिक्षकों अथवा अधिकारियों से बातचीत कर अपनी जिज्ञासा तथा शंकाओं का समाधान प्राप्त कर सकते है। सत्र 2019–20 में लगभग 1,34,000 से अधिक कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी इसके माध्यम से लाभान्वित हो चुके है।

मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का प्रकाशन

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा एक मासिक पत्रिका "पशुपालन नए आयाम" का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में कृषि और पशुपालन संबंधी महत्वपूर्ण समाचार, पशुरोग पूर्वानुमान बुलेटिन और पशुपालन उपयोगी पहलुओं की जानकारी दी जाती है। प्रतिमाह इस पत्रिका की 5000 प्रतियां प्रकाशित की जाती है जो पशुपालकों एवं किसानों को निःशुल्क वितरित की जाती है।

गौशालाओं के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन

डेयरी प्रबंधकों, पशुपालकों और गौशाला व्यवस्थापकों के लिए निदेशालय, गोपालन, जयपुर के सुयंक्त तत्वावधान में तीन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन क्रमशः 18–20 जुलाई, 09–11 अक्टूबर और 11–13 दिसम्बर, 2019 को किया गया। जिसमें कुल 109 डेयरी प्रबंधकों, पशुपालकों और गौशाला व्यवस्थापकों ने भाग लिया।

ऑरियेन्टेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा शिक्षण पद्धतियों पर 100 नवागंतुक सहायक प्राध्यापको हेतु 21 दिवसीय तीन ऑरियेन्टेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें प्रशासनिक, वित्तिय, प्रबंधन की कुशलता बढ़ाकर प्रभावी शिक्षण पद्धतियों हेतु प्रशिक्षित किया गया। ऑरियेन्टेशन प्रशिक्षण शिविर क्रमशः 28 मार्च से 17 अप्रेल, 10 मई से 30 मई एवं 21 जून से 11 जुलाई 2019 को आयोजित किए गए।

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा विश्वविद्यालय में प्रदर्शनी का आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 4 अप्रेल, 2019 को केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर, 30 अगस्त, 2019 को केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, बीकानेर, 16 सितम्बर, 2019 को केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर एवं 17 दिसम्बर, 2019 को राज्य सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में विद्याधर नगर जयपुर में राज्य स्तरीय कार्यक्रम एवं किसान मेले में विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

4. आलौच्य वर्ष में विशेष पहल एवं उपलब्धियां

राज्य सरकार द्वारा नया वेटरनरी कॉलेज जोधपुर में खोलने को मंजूरी

राज्य सरकार ने इस वर्ष की बजट घोषणा में राज्य में एक नये वेटरनरी महाविद्यालय को जोधपुर में खोलने की स्वीकृति प्रदान की है। जोधपुर में खुलने वाला यह नया वेटरनरी कॉलेज, वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर का चौथा संघटक महाविद्यालय होगा। राज्य सरकार द्वारा इस नए महाविद्यालय के लिए 41 शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक पदों की स्वीकृति भी प्रदान की जा चुकी है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय को यू.जी.सी. 12–बी की मान्यता

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को यू.जी.सी. 12–बी एक्ट के तहत मान्यता प्रदान की गई है। राज्य के सभी कृषि एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की केटेगरी में यू.जी.सी. से 12–बी मान्यता प्राप्त करने वाला वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर पहला विश्वविद्यालय बन गया है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को राज्य का ई–गर्वनेन्स अवार्ड–2019

राज्य के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा को राज्य का "ई–गर्वनेन्स राजस्थान अवार्ड" प्रदान किया। मुख्यमंत्री ने दिनांक 19 अगस्त, 2019 राज्य के सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग द्वारा बिड़ला ऑडिटोरियम, जयपुर में आयोजित "राजस्थान नवाचार मीट" समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय में एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन प्रणाली को विकसित कर वेटरनरी विश्वविद्यालय को पूरी तरह ई–गर्वनेन्स मोड पर लाये जाने के कारण इस पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है। विश्वविद्यालय ने तमाम गतिविधियों को ई–गर्वनेन्स के तहत लाकर उत्तरपुस्तिकाओं की जांच की प्रक्रिया को ऑनलाइन किया है। विश्वविद्यालय परिसर और बाहर के संस्थानों में इन्टरनेट सुविधा प्रदान की गई है। संस्थापन, बजट–वित्त, पेन्शन, पशुचिकित्सालय के प्रबंधन कार्यों को पूरी तरह ई–गर्वनेन्स के तहत किया गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् : कृषि विश्वविद्यालय रैंकिंग–2018

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा कृषि विश्वविद्यालयों की घोषित रैंकिंग–2018 में राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने 42 वां स्थान हासिल किया है। इस रैंकिंग में देश के कुल 60 कृषि व वेटरनरी विश्वविद्यालय शामिल हुए हैं। इस रैंकिंग में राज्य के कृषि विश्वविद्यालयों में वेटरनरी विश्वविद्यालय ने दूसरा स्थान हासिल किया है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को राजस्थान के राजकीय विश्वविद्यालयों की रैकिंग में प्रथम स्थान

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क की इंडिया रैंकिंग–2019 में देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों में शीर्ष और राजस्थान के राजकीय विश्वविद्यालयों की कैटेगेरी में प्रथम स्थान बनाया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर राज्य का एक मात्र राजकीय विश्वविद्यालय है जिसने एन.आई.आर.एफ.–2019 में राज्य वित्त पोषित कैटेगेरी में अपना प्रथम स्थान बनाने में कामयाबी हासिल की है। इसके साथ ही इस बार देश के पहले तीन सर्वश्रेष्ठ पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में भी यह विश्वविद्यालय शामिल हुआ है। देश के 1479 विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर 101–150 की रैंकिंग में शामिल हुआ है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय का संघटक वेटरनरी कॉलेज नवानियां, उदयपुर वीसीआई की प्रथम अनुसूची में शामिल

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) की स्नातक डिग्री को 8 मार्च, 2019 को भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् की प्रथम अनुसूचि में शामिल किया गया है। केन्द्रीय सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के तहत वेटरनरी कॉलेज, नवानियां को वीसीआई की अनुसूची में शामिल किया गया है। वेटरनरी कौंसिल ऑफ इंडिया की सलाहकार समिति की अभिशंषा के बाद यह नोटिफिकेशन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी किया गया है।

विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह में दिनांक 8 अगस्त, 2019 को पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के 669 छात्र–छात्राओं को उपाधियाँ, 30 को स्वर्ण पदक तथा एक को कुलाधिपति स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया। दीक्षांत समारोह में स्नातक योग्यता प्राप्त करने वाले 433 छात्र–छात्राओं को उपाधियाँ, स्नातकोत्तर 198 को तथा 38 को विद्या वाचस्पति उपाधियाँ प्रदान की गई।

एनिमल सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक का बीकानेर में माननीय पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया द्वारा उद्घाटन

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के सर्जरी विभाग में सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक का उद्घाटन 8 अगस्त, 2019 को माननीय पशुपालन मंत्री श्री लालचंद कटारिया एवं उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री भंवरसिंह भाटी की उपस्थिति में हुआ। इस ब्लॉक में सी.टी. स्केन इकाई, सोनोग्राफी इकाई, लैप्रोस्कोपी इकाई, लेजर सर्जरी इकाई, नेत्र रोग इकाई, ऑर्थोपेडिक इकाई तथा दंत रोग इकाईयां हैं। इन सभी इकाईयों में पशुचिकित्सा में काम आने वाले अत्याधुनिक उपकरण स्थापित किये गये हैं। इन उपकरणों की सहायता से सभी प्रकार के पशुओं के विभिन्न रोगों का निदान व उपचार किया जायेगा, जिसका सीधा लाभ पशुपालकों व किसानों को मिलेगा।

झुंझुनूं में विश्वविद्यालय का नया वी.यू.टी.आर.सी. प्रारम्भ

इस वर्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 14 वां पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुन्झुनू में शुरू किया गया। इस केन्द्र का उद्देश्य कृषको–पशुपालको तक पशुपालन की नवीन तकनीको पर प्रशिक्षण प्रदान कर पशुधन उत्पादन को बढ़ाना है।

राजुवास दुग्ध पार्लर का लोकार्पण

देशी गौवंश एवं दुग्ध उत्पादन केन्द्र का लोकार्पण माननीय केबीनेट मंत्री ऊर्जा, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भूजल विभाग डॉ. बी. डी. कल्ला एवं उच्च शिक्षा राज्यमंत्री श्री भंवरसिंह भाटी के कर कमलों द्वारा 13 दिसम्बर 2019 को किया गया। देशी गोवंश दूध की बढ़ती हुई मांग, पालन को बढ़ावा देने के साथ–साथ विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को अनुसंधान और स्वरोजगार के लिए दूध के प्रसंस्करण कार्यों के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय की डेयरी में दुग्ध वितरण के कार्य को करने के लिए मिल्क ए.टी.एम. की स्थापना की गई है।

उन्नत पशुधन तकनीक से वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के 49970 पशुपालक लाभान्वित

राज्य के बाकलिया (नागौर), सूरतगढ, चूरू, कुम्हेर (भरतपुर), अजमेर, सिरोही, डूंगरपुर, टोंक, धौलपुर, चितौड़गढ़, कोटा, लूणकरणसर (बीकानेर), जोधपुर एवं झुंझुनूं जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा पशुकल्याण सेवाओं के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के लिए पशुपालक प्रशिक्षण शिविर (1088), पशुचिकित्सा शिविर (12), पशुपालक गोष्ठी (105), वैज्ञानिक पशुपालक संवाद (48), फील्ड दिवस (126), जागरूकता शिविर (75) और उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन (68) का आयोजन कर गत एक वर्ष में कुल **49970** पशुपालकों को लाभांवित किया जा चुका है।

पशुरोग निदान सेवाएं शुरू

राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर पशुपालकों के लिए इस वर्ष पशुरोग निदान सेवाए प्रारम्भ की गई। जिसमें अबतक 1194 खून, दूध व गोबर के नमूनों की जांच कर पशुपालकों को रोगों के प्रति जागरूक किया गया।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में वेटरनरी विश्वविद्यालय को 7.50 करोड़ रूपये राशि का अनुदान स्वीकृत

भारत सरकार की राष्ट्रीय कृषि विकास योजना "रफ्तार" के अन्तर्गत वेटरनरी विश्वविद्यालय को वर्ष 2019–20 के लिए 7 करोड़ 50 लाख रूपये अनुदान की स्वीकृति प्रदान की है। इससे विश्वविद्यालय में 6 नई परियोजनाएं प्रारंभ की जाएगी जिस पर 6.50 करोड़ रूपये राशि व्यय होगी। पूर्व में संचालित की जा रही 4 परियोजनाओं के लिए भी 1 करोड़ रू. की राशि की भी मंजूरी प्रदान की गई है। नई परियोजनाओं के तहत दक्षिणी राजस्थान में गाय–भैंसों की प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए राजकीय पैरावेट को प्रशिक्षण दिया जाएगा। राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन की दुग्ध समितियों के सचिवों और प्रयोगशाला

कार्मिकों को स्वच्छ और गुणवत्ता वाले दुग्ध उत्पादन के लिए दक्षता कार्यक्रम भी चलाए जायेंगे। राज्य में देशी नस्ल की मुर्गियों के जर्मप्लाज्म को गुणित करने के लिए पोल्ट्री इकाई का गठन किया जाएगा। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ''रफ्तार'' के तहत ही देश गौवंश राठी के फार्म को जैविक डेयरी फार्म के रूप में विकसित करने के लिए 1 करोड़ 5 लाख रूपये की राशि व्यय की जाएगी। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रो पर पशु आहार प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना की परियोजना को भी स्वीकृति मिली है। विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा उपचार एवं फार्म की बेहतरी सेवाओं के लिए जयपुर स्थित स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के विद्यार्थियों के हेतु आवासीय सुविधाओं की स्वीकृति भी प्राप्त हुई है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय का देश के सात राष्ट्रीय संस्थानों के साथ आपसी करार (एम.ओ.यू.)

इस वर्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं इण्डियन ऑयल कॉरपोरेशन द्वारा पशुओं की हिमोडायलिसिस मशीन स्थापित करने का आपसी करार किया गया। इसी प्रकार राष्ट्रीय कृषि खाद्य प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली (चंडीगढ़), भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद के सेन्टर फॉर इन्नोवेशन एण्ड एन्टरप्रेन्यारेशिप, केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार, केन्द्रीय गौवंश अनुसंधान संस्थान, मथुरा, स्वामी केश्वानंद कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, सहज (एन.जी.ओ.) जयपुर, और आर्युवेट, नई दिल्ली के साथ आपसी करार किये गए।

राष्ट्रीय स्तर की वैज्ञानिक संगोष्ठियों का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के पशु औषधीय चिकित्सा विभाग में 1–3 फरवरी को राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया, इनमें देश के नामी–गिरामी पशुचिकित्सकों, वैज्ञानिकों और अनुसंधान वेत्ताओं ने भाग लिया।

राजुवास ई–बुलेटिन का शुभारम्भ

डिजिटलाइजेशन के दौर में नेट पर सूचना की क्रांति की तर्ज पर वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के लिए ई–बुलेटिन शुरू किया गया है। इसके माध्यम से पशुचिकित्सा स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पशुचिकित्सा के क्षेत्र में नवाचार, अत्याधुनिक तकनीकी ज्ञान, रोजगार और अन्य उपयोगी कार्यक्रम एवं गतिविधियों की जानकारी निरनतर उपलब्ध करावाई जा रही है।

100 सहायक प्राध्यापकों का ओरियटेशेन प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के 100 नवागंतुक सहायक प्राध्यापकों का 21 दिवसीय दीर्घ अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्धारित मापदण्डों की अनुपालना में यह प्रशिक्षण तीन चरणों में पहला 11 जुलाई 2019 को 32 सहायक प्राध्यापक, दूसरे चरण का 30 मई 2019 का 35 तथा तीसरे चरण में 17 अप्रैल 2019 को 33 सहायक प्राध्यापकों के लिए किए गए। प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को शिक्षण तकनीकों के साथ–साथ वित्तीय प्रबंधन, प्रशासनिक कुशलता व व्यावहारिक ज्ञान करवाकर सहायक प्राध्यापकों को अधिक संवेदनशीलता के साथ कार्य पद्धति को प्रभावशाली बनाना है।

पशुचिकित्सा अधिकारियों का अर्न्तराष्ट्रीय प्रशिक्षण आयोजित

अर्न्तराष्ट्रीय स्तर का पशुचिकित्सा अधिकारियों का 9 दिवसीय प्रशिक्षण वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में 10 मई 2019 से आयोजित किया गया। बांग्लादेश के 15 पशुचिकित्सा अधिकारियों का दल डॉ. के.एम. बजलुर रहमान के नेतृत्व में आया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम दक्षिण एशिया पशुधन विकास परियोजना के तहत आयोजित किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता और उन्नत पशुचिकित्सा तकनीकी के क्षेत्र में यहां उपलब्ध सुविधाओं और अग्रता के मद्देनजर यहां का चयन किया गया। इससे पूर्व बांग्लादेश सरकार के मत्स्य एवं पशुपालन के अधिकारियों के दल ने 27 फरवरी 2019 को वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के विभिन्न विभागों का भ्रमण कर यहां संचालित पशुचिकित्सा सेवाओं, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा सेवाओं और गतिविधियों का अध्ययन किया।

5. सार संक्षेप

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की धारा 1 उपखण्ड (3) के अन्तर्गत नवस्थापित विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वयं माननीय राज्यपाल है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना दिनांक 13 मई, 2010 को की गई।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी.जी.आई.वी.ई. आर., जयपुर में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। स्नातक पाठ्यक्रम हेतु 240 सीटें, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 18 विषयों हेतु 112 सीटें एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम 10 विषयों हेतु 24 सीटें उपलब्ध है। विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदेश के 81 शिक्षण केद्रों पर चलया जा रहा है जिसमें प्रतिवर्ष लगभग 4800 विद्यार्थी प्रशिक्षित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के स्वीकृत कुल 1210 (शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक) पदों पर 141 शैक्षणिक स्टॉफ तथा शेष अशैक्षणिक पदों पर कुल 317 अधिकारी/मंत्रालय कर्मचारी एवं अन्य कर्मचारी कार्यरत है। विश्वविद्यालय ने तमाम गतिविधियों को ई–गर्वनेंस के तहत लाकर प्रवेश, भर्ती और उत्तरपुस्तिका की जाँच की प्रक्रिया को ऑनलाइन किया है। ऑनलाइन उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करवाने वाला यह विश्वविद्यालय देश का प्रथम विश्वविद्यालय बन गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क की इंडिया रैंकिंग–2019 में देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों में शीर्ष और राजस्थान के राजकीय विश्वविद्यालयों की कैटेगेरी में प्रथम स्थान बनाया है। राज्य के सभी कृषि एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की केटेगरी में यू.जी.सी. से 12–बी मान्यता प्राप्त करने वाला वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर पहला विश्वविद्यालय बन गया है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के सर्जरी विभाग में सुपर स्पेशलिटी ब्लॉक का उद्घाटन हुआ। इस ब्लॉक में सी.टी. स्केन, सोनोग्राफी, लैप्रोस्कोपी, लेजर सर्जरी, नेत्र रोग, ऑर्थोपेडिक तथा दंत रोग इकाईयां हैं, जिसका सीधा लाभ पशुपालकों व किसानों को मिलेगा।

विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के निष्पादन के लिए समस्त सुविधाओं से सम्पन्न है। सरकार की नीति के अनुसार प्रत्येक जिलें में विश्वविद्यालय का एक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र खोला जाये जिसकी क्रियान्विति में अब तक 13 स्थानों पर वी.यू.टी.आर.सी खोले जा चुके है। इस वर्ष 14 वा वी.यू.टी.आर.सी. केन्द्र झुंझुनूं जिले में स्थापित किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालको तक नवीनतम शोध की जानकारी पहुचाने हेतु उनकी समस्याओं के समाधान हेतु 14 वी. यू.टी.आर.सी. केन्द्र बाकलिया, सूरतगढ़, कुम्हेर, बोजुन्दा, चूरू, टोंक, डूंगरपुर, सिरोही, कोटा, धौलपुर, लूणकरनसर, अजमेर, जोधपुर और झुंझुंनू में एवं एक कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में स्थापित किये गए है। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह का केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के द्वारा पशुकल्याण सेवाओं के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के लिए पशुपालक प्रशिक्षण शिविर (1144), पशुचिकित्सा शिविर (14), पशुपालक गोष्ठी (125), वैज्ञानिक पशुपालक संवाद (53), फील्ड दिवस (155), जागरूकता शिविर (97) और उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन (81) का आयोजन कर गत एक वर्ष में कुल 49970 पशुपालकों को लाभांवित किया जा चुका है। विश्वविद्यालय द्वारा रेडियो कार्यक्रम ''धीणे री बात्यां'' प्रदेश के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित किया जा रहा है। वर्तमान में इस कार्यक्रम का प्रसारण हर माह के प्रथम एवं तृतीय गुरूवार को सांय 5:30 बजे से 6.00 बजे तक किया जाता है। 264 वां प्रसारण माह दिसम्बर, 2019 तक हुआ है। राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर पशुपालकों के लिए इस वर्ष पशुरोग निदान सेवाए प्रारम्भ की गई। जिसमें अब तक 1194 खून, दूध व गोबर के नमूनों की जांच कर पशुपालकों को रोगों के प्रति जागरूक किया गया।

भारत सरकार की राष्ट्रीय कृषि विकास योजना "रफ्तार" के अन्तर्गत वेटरनरी विश्वविद्यालय को वर्ष 2019–20 के लिए 7 करोड़ 50 लाख रूपये अनुदान की स्वीकृति प्रदान की है। इससे विश्वविद्यालय में 6 नई परियोजनाएं प्रारंभ की जाएगी जिस

पर 6.50 करोड़ रूपये राशि व्यय होगी। पूर्व में संचालित की जा रही 4 परियोजनाओं के लिए भी 1 करोड़ रू. की राशि की भी मंजूरी प्रदान की गई है। नई परियोजनाओं के तहत दक्षिणी राजस्थान में गाय–भैंसों की प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लिए राजकीय पैरावेट को प्रशिक्षण दिया जाएगा। राजस्थान कोऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन की दुग्ध समितियों के सचिवों और प्रयोगशाला कार्मिकों को स्वच्छ और गुणवत्ता वाले दुग्ध उत्पादन के लिए दक्षता कार्यक्रम भी चलाए जायेंगे। राज्य में देशी नस्ल की मुर्गियों के जर्मप्लाज्म को गुणित करने के लिए पोल्ट्री इकाई का गठन किया जाएगा। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना ''रफ्तार'' के तहत ही देश गौवंश राठी के फार्म को जैविक डेयरी फार्म के रूप में विकसित करने के लिए 1 करोड़ 5 लाख रूपये की राशि व्यय की जाएगी। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रो पर पशु आहार प्रसंस्करण इकाईयों की स्थापना की परियोजना को भी स्वीकृति मिली है। विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा उपचार एवं फार्म की बेहतरी सेवाओं के लिए परियोजनाएं शामिल है। तथा जयपुर स्थित स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के विद्यार्थियों के हेतु आवासीय सुविधाओं की स्वीकृति भी प्राप्त हुई है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के पशु औषधीय चिकित्सा विभाग में 1–3 फरवरी को राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया, इनमें देश के नामी–गिरामी पशुचिकित्सकों, वैज्ञानिकों और अनुसंधान कर्ताओं ने भाग लिया।

डिजिटलाइजेशन के दौर में नेट पर सूचना की क्रांति की तर्ज पर वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के लिए ई–बुलेटिन शुरू किया गया है। इसके माध्यम से पशुचिकित्सा स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पशुचिकित्सा के क्षेत्र में नवाचार, अत्याधुनिक तकनीकी ज्ञान, रोजगार और अन्य उपयोगी कार्यक्रम एवं गतिविधियों की जानकारी निरनतर उपलब्ध करवाई जा रही है।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के 100 नवागंतुक सहायक प्राध्यापकों का 21 दिवसीय दीर्घ अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को शिक्षण तकनीकों के साथ–साथ वित्तीय प्रबंधन, प्रशासनिक कुशलता व व्यावहारिक ज्ञान करवाकर सहायक प्राध्यापकों को अधिक संवेदनशीलता के साथ कार्य पद्धति को प्रभावशाली बनाना है।

अर्न्तराष्ट्रीय स्तर का पशुचिकित्सा अधिकारियों का 9 दिवसीय प्रशिक्षण वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में आयोजित किया गया। बांग्लादेश के 15 पशुचिकित्सा अधिकारियों का दल डॉ. के.एम. बजलुर रहमान के नेतृत्व में आया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम दक्षिण एशिया पशुधन विकास परियोजना के तहत आयोजित किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता और उन्नत पशुचिकित्सा तकनीकी के क्षेत्र में यहां उपलब्ध सुविधाओं और अग्रता के मद्देनजर इस विश्वविद्यालय का चयन किया गया। इससे पूर्व बांग्लादेश सरकार के मत्स्य एवं पशुपालन के अधिकारियों के दल ने वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के विभिन्न विभागों का भ्रमण कर यहां संचालित पशुचिकित्सा सेवाओं, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा सेवाओं और गतिविधियों का अध्ययन किया।

देशी गौवंश एवं दुग्ध उत्पादन केन्द्र का लोकार्पण किया गया। इससे देशी गोवंश दूध की बढ़ती हुई मांग एवं पशु पालन को बढ़ावा देने के साथ–साथ विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को अनुसंधान और स्वरोजगार के लिए दूध के प्रसंस्करण कार्यों के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय की डेयरी में दुग्ध वितरण के कार्य को करने के लिए मिल्क ए.टी.एम. की स्थापना की गई है।

इस वर्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं इण्डियन ऑयल कॉरपोरेशन द्वारा पशुओं की हिमोडायलिसिस मशीन स्थापित करने का आपसी करार किया गया। इसी प्रकार राष्ट्रीय कृषि खाद्य प्रौद्योगिकी संस्थान, मोहाली (चंडीगढ़), भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद के सेन्टर फॉर इन्नोवेशन एण्ड एन्टरप्रेन्यारेशिप, केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार, केन्द्रीय गौवंश अनुसंधान संस्थान, मथुरा, स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, सहज (एन.जी.ओ.) जयपुर, और आर्युवेट, नई दिल्ली के साथ आपसी करार किये गए।

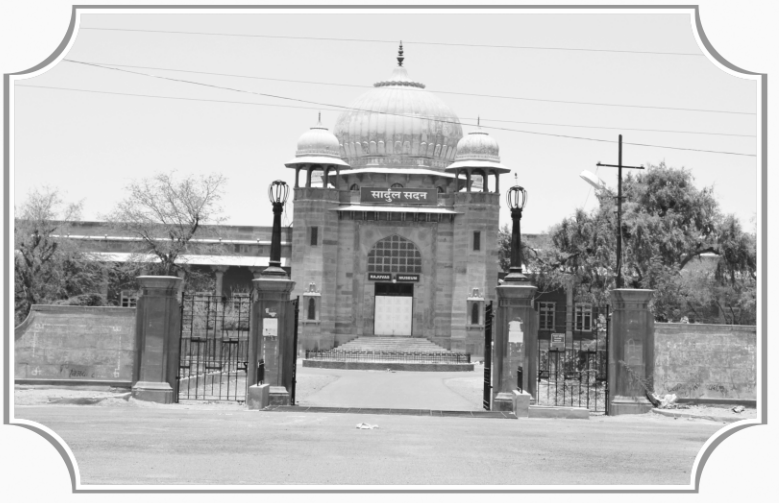

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
बीकानेर

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय
नवानियां, वल्लभनगर (उदयपुर)

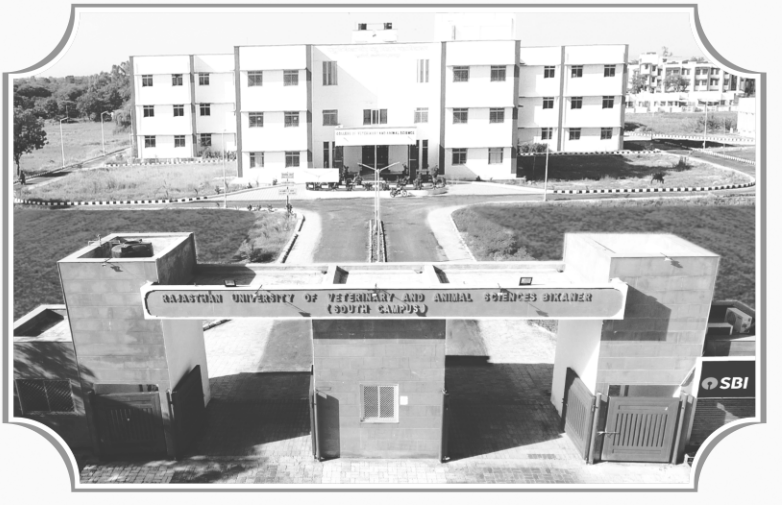

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं
अनुसंधान संस्थान
जयपुर

प्रकाशक

प्राथमिकता, नियंत्रण एवं मूल्यांकन प्रकोष्ठ (पी. एम. ई. सेल)

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

टेलीफोन: 0151-2543419 ईमेल: dpmerajuvas@gmail.com

मुद्रक : जवाहर प्रेस, बीकानेर # 9784911114